यह पत्रिका–'विमर्श'

इस समय देश भर में प्राथमिक शिक्षा के व्यापक प्रसार हेतु अनेक कार्यक्रम जोर-शोर से चलाये जा रहे हैं । कहीं पर ये प्राथमिक औपचारिक शिक्षा की मुख्यधारा के विस्तार के रूप में हैं तो कहीं अनौपचारिक और औपचारिक शिक्षा की अनुपूरक प्रक्रियाओं के रूप में संचालित हैं ।
शिक्षा के इन व्यापक प्रसार कार्यक्रमों को लेकर शिक्षा-जगत में शिकायतों और शंकाओं की भी कमी नहीं हैं । शिकायतों का आधार सामान्यत: कार्यक्रमों की सतही क्रियान्विति होता है । यदि कहीं क्रियान्वयन संतोषप्रद होता भी है तो अक्सर शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर शंकाएं बनी रहती हैं ।

इस प्रसंग में चिंता का एक मुद्दा यह है कि समकालीन शिक्षा-दर्शन और प्राथमिक शिक्षा के अहम् सैद्धांतिक पहलू जमीनी स्तर पर कितने स्थापित हो पा रहे हैं ? डर यह भी है कि शिक्षा के व्यापक स्तर पर फैलाव के कर्णधारों ने इन्हें कहीं हाशिये पर तो नहीं धकेल दिया है ?
दूसरी ओर, यदि इसी सवाल का रुख उलट कर देखें तो हमें पूछना पड़ेगा कि समकालीन शिक्षा-चिंतन अपनी 'स्वायत्त-दुनिया' के दायरे में ही सिमटा रहेगा अथवा इसका अतिक्रमण कर अपना विस्तार करेगा ?
शिक्षा क्षेत्र के इस 'वृहत्-संसार' के समानान्तर एक छोटी दुनिया भी है । इस दुनिया में कुछ लोग अपने शैक्षिक सोच को व्यवहार में उतारना चाहते रहे हैं तो कुछ दूसरे अपने शैक्षिक कर्म का सैद्धांतिक निरूपण करने का प्रयास करते रहे हैं । ये इस छोटी दुनिया के दोतरफा प्रयास हैं । हालांकि इस दुनिया का छोटा होना ही इसकी सीमा भी है । इसके बावजूद शैक्षिक चुनौतियों से जूझने की दिशा में चिंतन और कर्म की उक्त अन्त: प्रक्रिया ठोस और महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

उक्त परिदृश्य में इस पत्रिका का प्रकाशन उन प्रयासों में से एक लघु प्रयास है जो शैक्षिक चिंतन और कर्म के मध्य सेतु-निर्माण और संवाद के लिए प्रतिश्रुत है ।
यह काम चुनौतीपूर्ण है, इसका हमें अहसास है ।

हमारा प्रयास होगा कि 'विमर्श' मात्र अकादमिक पत्रिका होकर न रह जाये । हमें लगता है कि शिक्षा के प्रति गहरा सरोकार रखने वाले चिंतक अपने सोच को जमीन पर देखने के लिए उत्सुक होंगे और शिक्षा के क्षेत्र में जमीनी स्तर पर सक्रिय लोगों से संवाद रखना चाहेंगे । साथ ही बच्चों की शिक्षा के प्रति चिंता रखने वाले लोग भी इस संवाद में जरूर शामिल होना चाहेंगे । और बच्चे, वे तो इस उपक्रम की प्रेरणा और लक्ष्य हैं ।

जो शिक्षक अपने कर्म की व्यवहारगत समस्याओं के हल और भविष्य की दिशा तलाशने के लिए शिक्षा-दर्शन को स्रोत मानते है ; पत्रिका की कोशिश होगी कि यह उनके लिए अभिव्यक्ति का उपयुक्त मंच बन सके ।

लेकिन बहुतेरे शिक्षक तथा दूसरे और लोगों के साथ यह समस्या हो सकती है कि वे अपने सोच और अनुभव को वैसे अभिव्यक्त न कर सकें जैसी 'अकादमिक' अपेक्षा करते हैं । अपने आपको वे जिन विधाओं में व्यक्त कर रहे हैं, वे 'लेखन शिल्प' के मानदण्डों पर भी उतनी परिष्कृत हों - यह जरूरी नहीं है ।

विमर्श का प्रवेशांक प्रस्तुत है । इसका यह स्वरूप एकदम तयशुदा और अंतिम नहीं है । यह चिंतन और संवाद की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित होता रहेगा- ऐसी आशा की गयी है । ◆